विश्व पर्यटन दिवस पर विशेष

भगवान श्री कृष्ण की राजधानी द्वारिका

परिमल नथवाणी

भारत के पश्चिमी समुद्री तट पर गुजरात में जामनगर जिले का द्वारिका नगर भगवान

श्री कृष्ण की पौराणिक नगरी द्वारिका है। महाभारत एवं हरिवंश पुराण के उल्लेखों से भी द्वारिका का यही स्थान निर्धारित होता है। कहते हैं कि प्राचीन नगरी द्वारिका सुवर्ण नगरी थी। करीब 3500 से 5000 साल पहले श्री कृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारिका पधारे। श्री कृष्ण के कहने पर वरूण देवता के प्रताप से समंदर ने जगह छोड़ी और स्थपति देव विश्वकर्मा ने रातों रात द्वारिका नगर का निर्माण किया। उस काल में द्वारिका नगरी अतिशय प्राकृतिक एवं भौतिक संपदा से समृद्ध थी। द्वारिका शब्द की व्युत्पत्ति 'द्वार' एवं 'का' इन दो शब्दों से हुई है। 'द्वार' अर्थात् दरवाजा और 'का' अर्थात् मुक्ति। आज भी श्री कृष्ण द्वारकाधीश के त्रैलोक्य सुंदर जगत मंदिर के दो मुख्य दरवाजे हैं: स्वर्ग-द्वार एवं मोक्ष-द्वार। गोमती के पवित्र जल में स्नान कर के भक्तगण 'स्वर्ग-द्वार' से प्रवेश करते हैं, द्वारकाधीश के दर्शन करते हैं और 'मोक्ष-द्वार' से बाहर निकलते हैं। यह हमारा जीवन दर्शन भी है और एक प्रतीकात्मक बात भी। स्वर्ग में जाने के लिए मनुष्य का पवित्र होना जरूरी है और भगवान की भक्ति से मोक्ष प्राप्त हो सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मथुरा छोड़ने के पश्चात श्री कृष्ण अधिकांशतः द्वारिका में ही रहे हैं। वे बार-बार हस्तिनापुर अवश्य गये हैं लेकिन मुख्य रूप से द्वारिका में रह कर ही उन्होंने कौरवों और पांडवों के पारिवारिक विवाद में मध्यस्थता की। श्री कृष्ण के जीवन की कतिपय महत्वपूर्ण घटनाएं उनके द्वारकाधीश या द्वारकानाथ के रूप में ही घटी हैं। गीताकार योगेश्वर कृष्ण द्वारकाधीश बनने के बाद की घटना है। पौराणिक विवरणों के मुताबिक श्री कृष्ण की जन्मतिथि 19 जुलाई 3228 ईसा पूर्व है, ऐसा विद्वान लोग बताते हैं। इस युगावतार ने 106 वर्ष की आयु पाई और गुजरात में पश्चिमी समुद्र तट पर ही एक और प्राचीन तीर्थ सोमनाथ के निकट 17/18 फरवरी 3102 ईसा पूर्व को नश्वर देह का त्याग किया। वर्तमान गुजरात सरकार कृषि, औद्योगिक और आर्थिक विकास के साथ-साथ अपने यहां पर्यटन को बढ़ाने का विशेष प्रयास कर रही है। अमिताभ बच्चन को ब्राण्ड एम्बेसडर बनाकर गुजरात में एक विशेष पर्यटन-नक्शा तैयार किया गया है जिसमें द्वारिका भी सम्मिलित है। सरकार तीर्थ-पर्यटन पर भी फोकस कर रही है। रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के सहयोग से द्वारिका में काफी विकास कार्य, पब्लिक प्राइवेट पार्टिसिपेशन अर्थात लोक भागीदारी से किए गए हैं और किए जा रहे हैं।

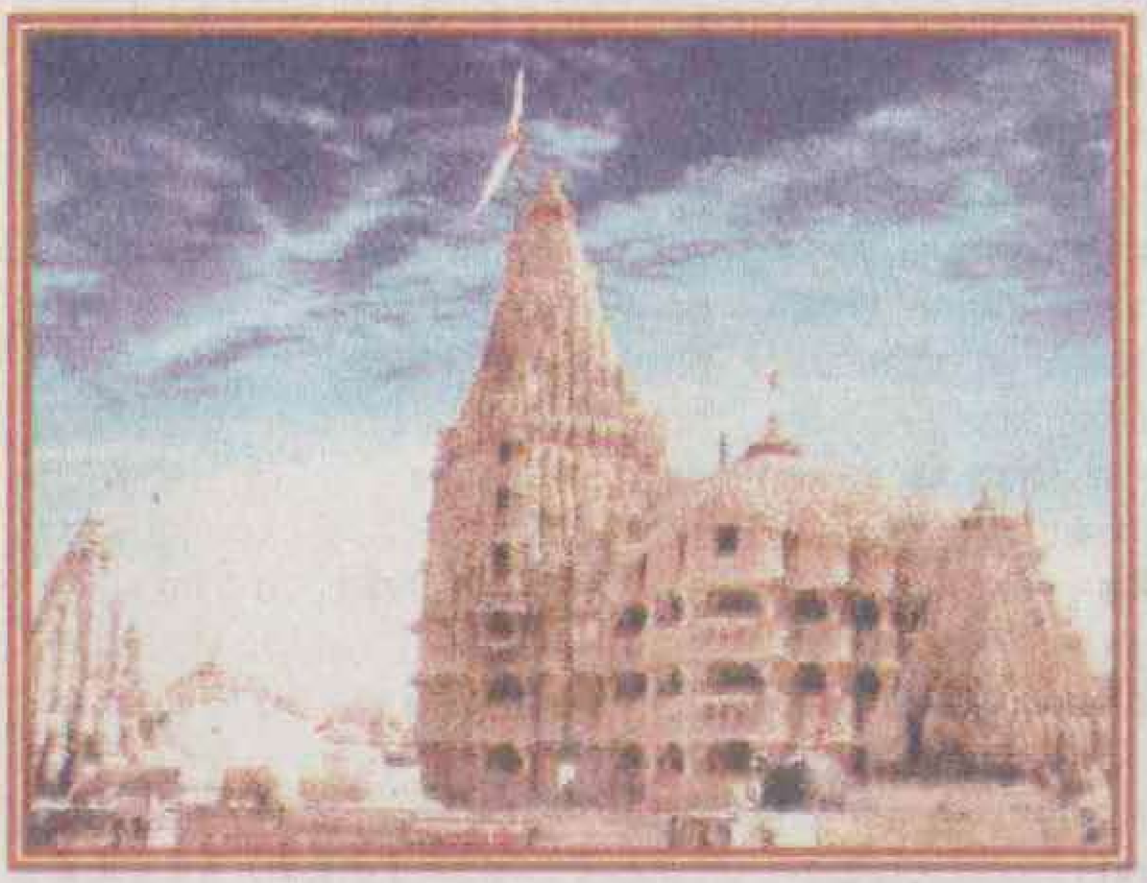

1.भगवान श्री कृष्ण द्वारिकाधीश और उनका स्वर्णछत्र 2. भगवान श्री द्वारिकाधीश के त्रैलोक्य सुंदर जगत मंदिर के गगनचुंबी शिखर।

झारखंड की स्थिति

पर्यटन उद्योग किसी भी राज्य के लिए आय और रोजगार के अवसर पैदा करने का जरिया बन सकता है। झारखंड के वर्तमान भूगोल को देख कर यहां भी पर्यटन विकास की असीम संभावनाएं दिख रही हैं। जरूरत है उसे फोकस कर के प्रयास करने की। झारखंड का प्राकृतिक सौंदर्य उसे 'इको-टूरिज्म' का प्रमुख आकर्षण बना सकता है। इसके अलावा, झारखंड में हेरिटेज पर्यटन, आदिवासी पर्यटन, धार्मिक पर्यटन आदि को बढ़ावा दिया जा सकता है। बेतला राष्ट्रीय उद्यान, सारंडा का साल वन और मंदिर, कोडरमा जिले का तिलैया बांध, अंग्रेजों के जमाने की 19वी सदी में बनी रांची की झील और पहाड़ी मंदिर, जमशेदपुर का डिमनालेक, भारत की प्राचीनतम संथाल जनजाति और उनकी पोशाकें, संगीत व नृत्य हमारी सर्वाधिक मूल्यवान सांस्कृतिक धरोहर है। गिरिडीह और लातेहार में एडवेन्चर टूरिज्म और देवघर व दुमका के प्राचीन हिन्दू तीर्थ देश के धार्मिक पर्यटन का हिस्सा बन सकते हैं। गुजरात के गिर जंगल के एशियाटिक शेर काफी विख्यात हैं इसी प्रकार झारखंड में हाथी, (बर्किंग डीयर) (भौंकते हिरन), रीछ, बाघ और चीते वन्य प्राणी प्रेमियों को लुभा सकते हैं। जरूरी है, इनको सही तरीके से राष्ट्रीय एवम अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन नक्शे पर लाया जाए, यात्रियों के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाएं बढ़ाई जाए और सही ढंग से प्रचार किया जाए। गुजरात में श्री कृष्ण की राजधानी द्वारिका का पौराणिक एवम धार्मिक महत्त्व है। पिछले एक दशक में मंदिर परिसर, गोमती नदी तट और रेल रास्तों व होटल-यात्री निवासों की सुविधाएं काफी बढ़ी है। इससे इन दिनों वहां पर्यटकों का तांता लगा रहता है।

(झारखण्ड के राज्य सभा सांसद श्री परिमल नथवाणी गुजरात में द्वारकाधीश देवस्थान समिति के उपाध्यक्ष हैं और रिलायन्स इण्डस्ट्रीज़ के ग्रूप प्रेसिडेन्ट भी हैं)

RANCHI EXPRESS Pg. 12 Dt 27/09/2011